ग़ज़लों के बादशाह मदन मोहन

स्व. मदनमोहन के अभाव ने हिंदी फिल्म-संगीत के एक अध्याय को जैसे बंद कर दिया है. ग़ज़ल की शोख़ी, उसकी महक हिंदी की फिल्मों के संगीत में घुली हुई प्रतीत होने लगी है. मदनमोहन का अपना अलग अंदाज़ था, रास्ता भी अलग था. वे कभी तात्कालिक लोकप्रियता की अंधी दौड़ में शामिल नहीं हुए और 25 वर्षों के लंबे कैरियर में उन्होंने लगभग 75 फिल्मों में ही संगीत दिया. उनका नाम उन थोड़े से संगीतकारों के नाम के साथ निश्चित रखा जा सकता है जिनकी अधिकांश फिल्मों का संगीत स्तरीय है. मदनमोहन की ऐसी फिल्मों के नाम ढूंढ़े से ही मिलेंगे जिनमें उनका संगीत हल्के स्तर का रहा हो.

मदनमोहन के संगीत में ग़ज़लों और ठुमरियों को बहुत खूबी से पेश किया गया. विशेषकर ग़ज़लों के तो वे बादशाह हैं. उन्होंने न केवल ग़ज़ल के साहित्य को पहचाना अपितु उसकी नज़ाकत, कशिश और शोख़ी को विविध रंगों में सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया. 'फिर वही शाम, वही ग़म, वही तन्हाई है, किसी की याद में दुनिया को है भुलाये हुए (जहांआरा) 'तुझे क्या सुनाऊं ए दिलरुबा' (आख़री दाव) 'आपकी नज़रों ने समझा प्यार के काबिल मुझे' (अनपढ़) 'हम हैं मताअ़े-कूचाए बाज़ार की तरह (दस्तक), आदि इसका प्रमाण हैं.

उन्होंने अपने संगीत में दर्द की मिठास को घोला है. उनकी धुनों में चार दिन में फीकी पड़ जाने वाली मस्ती नहीं है, ज़िंदगी की करुणा का स्पन्दन है. जहां उन्होंने खुशी के क्षणों के लिए तेज़ धुनें भी बनाई हैं, वहां भी लालित्य है. शायद यह उस स्वर्गीय फनकार की तल्लीनता का ही परिणाम है कि वह कभी जनता की बिगड़ी रुचि के पर्दे में अपने स्तर से गिरा नहीं. फिल्म 'हकीकत' का बेफिक्री के मूड का गीत 'मस्ती में छेड़ के तराना कोई दिल का, आज लुटायेगा खज़ाना कोई दिल का' तेज़ गति होते हुए भी इस तरह के अन्य गीतों से बिल्कुल अलग है. इसी तरह 'हीर रांझा' में नायिका की तीखी खुशी को मदनमोहन ने बहुत माधुर्य-पूर्ण स्वरूप में 'मिलो न तुम तो हम घबरायें, मिलो तो आँख चुरायें, हमें क्या हो गया है.' गीत में प्रस्तुत किया है. उन्होंने तीखी स्थितियों में भी संगीत को कर्कश नहीं होने दिया. उसकी सौम्यता को आनंद की आन्तरिकता को, निश्छल प्रवाह को कभी नष्ट नहीं किया. उन्होंने शास्त्रीय संगीत का सहज ढंग से प्रयोग किया. मदनमोहन का संगीत यह प्रमाणित है कि यह दावा भ्रामक है कि पश्चात्य संगीत ही अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सकता है, शास्त्रीय संगीत की सराहना भले ही हो जाये लेकिन वह जनता की ज़ुबान पर नहीं चढ़ पाता. इसी तरह उन्होंने अधिकांशतः अपनी फिल्मों में निरर्थक गीतों का प्रयोग बहुत ही कम किया है. उनकी फिल्मों के अनेक गीत उत्कृष्ट हिंदी-उर्दू काव्य के उदाहरण हैं. 'होके मजबूर मुझे उसने बुलाया होगा' 'कर चले हम फिदा जान ओ-तन साथियों' (हकीकत) 'रुके, रुके से कदम, रुक के बार-बार रुके' 'दिल ढूंढ़ता है फिर वही फुर्सत के रात-दिन, बैठे रहे तसव्वुरे जानां किये हुये' (मौसम) 'बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत गाता जाए बंजारा' (रेलवे प्लेटफार्म) 'कभी आए हकीकते-मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे-मजाज़ में' (दुल्हन एक रात की) 'उनको ये शिकायत है कि हम कुछ नहीं कहते' (अदालत) आदि कुछ ऐसे उत्कृष्ट गीत हैं.

समय मदनमोहन की सब्र का इम्तिहान लेता रहा और वे हमेशा खरे साबित होते रहे. उनके द्वारा संगीतबद्ध की बहुत से फिल्में असफल हुईं लेकिन उनका संगीत असफल नहीं हुआ. उसे अपार लोकप्रियता मिली. उन्होंने अपनी मधुर धुनों से संगीत प्रेमियों का प्यार जीता है. 'देख कबीर रोया.' फिल्म का अस्तित्व यदि आज भी शेष है तो उसका एकमात्र कारण है मदनमोहन के संगीतबद्ध किये ये अमर गीत 'कौन आया मेरे मन के द्वारे, पायल की झंकार के लिए, 'तू प्यार करे या ठुकराये-हम तो हैं तेरे दीवानों में, और 'हमसे आया न गया, उनसे बुलाया न गया' इन गीतों को वर्षों की धूल भी मलिन नहीं कर पाई है. इन गीतों का जादू आज भी अक्षुण है.

आज जब हिंदी फिल्म-संगीत पर पश्चिमी संगीत हावी है और संगीत की कोमलता नष्ट हो गई मालूम हो रही है, मदनमोहन ने 'लैला मजनूं' की धुनों के द्वारा इस एकरसता को एक बार पुनः तोड़ा था. उनकी दुखद मृत्यु के उपरांत रिलीज़ होने वाली 'लैला मजनूं' ने उनके संगीत को एक बार आसमान पर पुनः बैठा दिया. 'कोई पत्थर से न मारे मेरे दिवाने को' 'इस रेशमी पाज़ेब की झंकार के सदके' 'तेरे दर पे आया हूं, कुछ करके जाऊंगा' 'ये दावा आज दुनिया भर से मनवाने की खातिर आ' आदि गीतों में उनकी संगीत की अनूठी पकड़ की श्रेष्ठता को सिद्ध कर दिया. 'मौसम' भी उनकी मृत्यु के उपरांत ही प्रदर्शित हुई. यद्यपि इसके गीतों को 'लैला मजनूं' के गीतों जैसी अपार लोकप्रियता तो प्राप्त नहीं हुई, लेकिन उनकी ताज़गी और माधुर्य को स्वीकार किया गया.

तलत महमूद के स्वर को सबसे अधिक सार्थक स्वरूप में उपयोग करने वाले स्व. मदनमोहन ही हैं. उनकी ही भांति तलत भी ग़ज़लों के बादशाह थे. दरअसल तलत मदनमोहन के साथ ने फिल्म-संगीत की कई अत्यंत मधुर ग़ज़लें दी हैं. इसी तरह लता के आवाज़ के कंपन और उसकी सूक्ष्म बारीकियों को भी स्व. मदनमोहन ने ही सबसे अधिक पहचाना है और उसका उपयोग अपने गीतों में अत्यंत कुशलता से किया है. 'दस्तक' के [illegible] गीत 'बैयां न धरो ओ सजना' 'माई री मैं कासी कहूं पीर अपने जिया की' लता के स्वर और मदनमोहन [illegible] संगीत के अद्वितीय कौशल को सामर्थ्य को प्रमाणित करते हैं.

उन्होंने विदेशी धुनों को चुराने का कार्य नहीं किया. संगीत को अपनी ज़मीन से नहीं छूटने दिया. कोई प्रलोभन उन्हें अपने रास्ते से विचलित नहीं कर सका. संगीत के संदर्भ में उनका दृष्टिकोण सतही नहीं था, व्यावसायिक भी नहीं था. अन्यथा वे कुछ [illegible] पिचहत्तर फिल्मों में संगीत देने की जगह डेढ़-दो सौ फिल्मों में आसानी से संगीतबद्ध कर सकते थे. उनके पास फिल्मों की कमी नहीं थी. लेकिन उन्होंने यह रास्ता नहीं चुना. अपने संगीत के प्रति सदैव निष्ठावान रहे. धुनों की ताज़गी और उनके स्थायित्व की पक्की पहचान प्रस्तुत की. उनकी फिल्मों की तादाद कम हो सकती है लेकिन गुणवत्ता नहीं. हिंदी फिल्मों के विविध क्षेत्रों में ऐसे निष्ठावान, जागरूक कलाकार कम ही मिलेंगे. 'आख़िरी दाव' 'दुल्हन एक रात की' 'अदालत' 'वह कौन थी' 'मेरा साया' 'रेलवे प्लेटफार्म' 'जेलर' 'भाई भाई' 'जहांआरा' 'हीर रांझा' 'लैला मजनूं' आदि कुछ उनकी उत्कृष्ट फिल्में हैं जिनका संगीत अपनी मिसाल आप है.

स्व. मदनमोहन का नाम हिंदी फिल्म-संगीत की वह महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसके बिना उसकी पहचान कभी 'संपूर्ण' नहीं हो सकती. ●